1 - कहानी का नाम - अभिनव शाला

* विद्यालय का नाम - शासकीय एकीकृत कन्या माध्यमिक विद्यालय अमझेरा

* प्रधानाध्यापक का नाम - श्री अश्विन शर्मा

** यू डाइस कोड - **23251101308**

* विकासखंड का नाम - सरदारपुर

* जिले का नाम - धार

* संकुल का नाम - महाराव बख्तावरसिंहजी शा.उ.मा.वि. अमझेरा

* राज्य का नाम - मध्यप्रदेश

* संपर्क नंबर - **7694046002**

* ई - मेल - ashwinsharmaamzera@gmail.com

* विद्यालय का फोटो - ए 5 साईज

2 - पृष्ठभूमि - मध्यप्रदेश शासन के आदिवासी विकास विभाग द्वारा संचालित शासकीय एकीकृत कन्या माध्यमिकविद्यालय अमझेरा विकासखण्ड सरदारपुर जिला धार में शिक्षा के गुणात्मक सुधार , व्यावसायोन्मुखी शिक्षा प्रदान करने तथा अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से उक्त शाला की स्थापना की गई ।बालिका प्राथमिक शाला के रूप में ग्वालियर रियासत के समय से सन् 1921 में इस विद्यालय की स्थापना हुई, जिसे एक स्थानीय ब्राह्मण द्वारा बालिका शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु दान किये गये भवन में संचालित किया जाने लगा । सन् 1978 तक उक्त शाला इसी दान के भवन में संचालित की जाती रही । सन् 1979 में बालिकाओं की संख्या में वृद्धि होने के कारण उक्त शाला एक किराये के भवन में स्थानान्तरित कर संचालित की जाने लगी , जो सन् 1995 तक संचालित होती रही। सन् 1995 में उक्त शाला के भवन निर्माण हेतु तत्कालीन विकासखण्ड अधिकारी सरदारपुर द्वारा राशि की स्वीकृति प्रदान की गई तथा ग्राम पंचायत अमझेरा द्वारा स्थानीय राजमहल परिसर के बाहरी हिस्से में रिक्त पड़ी शासकीय भूमि पर दो कक्ष, एक कार्यालय एवं एक बरामदे के रूप में कन्या प्राथमिक विद्यालय अमझेरा के शाला भवन ने आकार लिया । सन् 1998 में प्रधानाध्यापक द्वारा अपने प्रयासों से दो कक्षों के निर्माण की स्वीकृति करवाई तथा 1999 में पुनः एक अतिरिक्त कक्ष निर्मित करवाया । इस प्रकार उक्त शाला पाँच कक्षों,एक बरामदा व एक कार्यालय कक्ष वाली शाला बन गई । सन् 2000 में अभिनव विद्यालय के रूप में चयनित होने के पश्चात् उक्त शाला में दो बड़े हाल, तीन अन्य अतिरिक्त कक्ष एवं एक कार्यालयीन कक्ष की स्वीकृति प्रदान की गई । आगे चलकर इसमें दो बड़े हॉल एवं चार कक्ष भी निर्मित करवाए गए ।

3. समस्या - अमझेरा क्षेत्र एक आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है ,जहाँ के पालकों में निरक्षरता व्याप्त होने के कारण वे अपनी बालिकाओं को शाला में भेजने के लिये किसी भी प्रकार से तैयार नहीं होते थे । आदिवासी समाज के लोग अपनी बालिकाओं को शाला में अध्ययन हेतु नहीं भेजकर उनसे मजदूरी करवाना,घर के मवेशियों को जंगल ले जाकर चरवाना,घर के अन्य छोटे बच्चों को सम्हालना,जंगल से लकड़ी-कंडे बीनकर लाकर उन्हें बाजार में बेचना,खाना बनवाना,पानी भरवाना,अनाज पीसवाना,घर की रखवाली करवाना आदि

कार्य करवाते थे । बालिका के थोड़ी सी बड़ी होने पर उसका 15 से 16 वर्ष की उम्र में विवाह कर दिया जाता था । इस प्रकार परिवार की निर्धन स्थिति के कारण ये शिक्षा के अधिकार से वंचित रह जाती थी ।

अमझेरा की जिन आदिवासी बालिकाओं का बचपन घर के कामों में कैद था

वही बचपन आज विद्यालय में आकर मुस्कुरा रहा है

4. **समस्या समाधान की प्रक्रिया** - शाला परिवार ने महसूस किया कि ये बालिकाएँ हमारे मन-आँगन में खिलने वाली आशाओं के सुन्दर पुष्प हैं । ये हमारी अमूल्य धरोहर और हमारे देश का भविष्य है । संसार भर में प्यार और खुशियाँ बांटने वाले बच्चों को सुरक्षा,विकास और पर्याप्त पोषण,समान अवसर, भेदभाव से मुक्त वातावरण, खेलकूद के अवसर एवं शोषण से संरक्षित किये जाने की जिम्मेदारी पूरी तरह से हम सबकी है । शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का स्तर ऊँचा उठेगा तो सम्पूर्ण राष्ट्र का स्तर अपने आप ही ऊँचा उठेगा । आवश्यकता है कि अशिक्षित एवं निरक्षरों को शिक्षा का महत्व समझाया जावे । इसी लक्ष्य को सामने रखकर शाला परिवार द्वारा सम्पूर्ण ग्राम में सघन सर्वे किया जाकर आदिवासी बालिकाओं को शिक्षा

की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये प्रतिवर्ष शत प्रतिशत बालिकाओं का शाला में नामांकन कर उन्हें शाला में लाने प्रयास किया जाने लगा ।

5. बदलाव - शाला परिवार ने महसूस किया कि ये बालिकाएँ हमारे मन-आँगन में खिलने वाली आशाओं के सुन्दर पुष्प हैं । ये हमारी अमूल्य धरोहर और हमारे देश का भविष्य है । संसार भर में प्यार और खुशियाँ बांटने वाले बच्चों

को सुरक्षा,विकास और पर्याप्त पोषण, समान अवसर, भेदभाव से मुक्त वातावरण, खेलकूद के अवसर एवं शोषण से संरक्षित किये जाने की जिम्मेदारी पूरी तरह से हम सबकी है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का स्तर ऊँचा उठेगा तो सम्पूर्ण राष्ट्र का स्तर अपने आप ही ऊँचा उठेगा। आवश्यकता है कि अशिक्षित एवं निरक्षरों को शिक्षा का महत्व समझाया जावे । इसी लक्ष्य को सामने रखकर शाला परिवार द्वारा सम्पूर्ण ग्राम में सघन सर्वे किया जाकर आदिवासी बालिकाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये प्रतिवर्ष शत प्रतिशत बालिकाओं का शाला में नामांकन कर उन्हें शाला में लाने प्रयास किया जाने लगा । बालिका शिक्षा के विरोधी अभिभावकों द्वारा किये जाने वाले अपमान,तिरस्कार,दुर्व्यवहार को सहते हुए भी शाला परिवार ने अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखकर उन्हें महिला निरक्षरता के दोषों एवं साक्षरता के लाभों से अवगत करवाया जाने लगा, जिसका परिणाम यह हुआ कि प्रतिवर्ष इस विद्यालय की दर्ज संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी । आज स्थिति यह है कि इस विद्यालय में अमझेरा के अतिरिक्त आसपास के 4 से 5 कि.मी. दूर बसे ग्रामों, मजरों, टोलों, फलियों से भी पैदल चलकर,वहाँ की शालाओं को छोड़कर आदिवासी बालिकाएँ अध्ययन हेतु आने लगी हैं । उक्त शाला की बालिका शिक्षा के क्षेत्र में सक्रियता एवं सजगता को देखते हुए राज्य शासन द्वारा सन् 2000 में इसे अभिनव विद्यालय के रूप में चयनित किया गया । विद्यालय परिवार ने व्यक्तिगत रूचि लेकर कन्या विद्यालय अमझेरा को सुन्दर ,हरा-भरा शासकीय प्राथमिक विद्यालय बनाकर इसे बालसभा भवन , वाटर कूलर , विशाल उपवन, सीमेन्ट कांक्रीटयुक्त विशाल शाला मैदान , प्रत्येक कक्ष में विद्युत प्रकाश व पंखों की व्यवस्था , कम्प्यूटर व खेल सामग्री से युक्त किया। निजी प्राथमिक शालाओं में भी जो सुविधाएँ सुलभ नहीं हैं , वे अपने प्रयासों से इस शाला को सुलभ करवाकर इसे सर्वसुविधायुक्त शासकीय प्राथमिक विद्यालय बनाया गया । उक्त विद्यालय के दो शिक्षकों को राज्य स्तरीय आचार्य सम्मान एवं राष्ट्रपति पुरस्कार की प्राप्ति भी विद्यालय की सबसे बड़ी उपलब्धि है ।

6 . आगामी योजना - बालिकाओं एवं पालकों की विशेष मांग पर कि उन्हें भी 8 वीं कक्षा तक शिक्षा का लाभ प्रदान करने हेतु कन्या माध्यमिक विद्यालय अमझेरा को भी इसी विद्यालय के भवन में गत दो सत्रों से संचालित किया जाने लगा है जिसमें वर्तमान में कक्षा 6 से 8 तक में कुल बालिकाएँ दर्ज हैं । यहाँ प्राथमिक विभाग की 179, माध्यमिक विभाग की 119 इस तरह कुल 298 बालिकाएँ अध्ययनरत् हैं । इस विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण में अत्यधिक सुधार हुआ एवं आज यह शिक्षा के क्षेत्र में नगर के निजी विद्यालयों से प्रतिस्पर्धा करता हुआ अपना गरिमा को स्थापित कर रहा है। अभी तक लन्दन का डी.एफ.आई.डी. दल, प्रदेश के तीन मुख्यमंत्री- श्री दिग्विजयसिंहजी, सुश्री उमाजी भारती एवं श्री बाबूलालजी गौर, जोधपुर (राजस्थान) के महाराजा गजसिंहजी, श्री एम.के.सिंह,आयुक्त महोदय राज्य शिक्षा केन्द्र मध्यप्रदेश, भारत के 24 सांसदों के निरीक्षण दल सहित सांसदद्वय श्री विक्रम वर्मा व श्री छतरसिंह

दरबार , राज्यसभा सदस्य श्रीमती सुषमा स्वराज (दो बार) , विधायक श्री मुकामसिंह निगवाल , श्री आर.एन.बेरवा, प्रमुख सचिव आदिम जाति कल्याण विभाग, म.प्र.शासन, श्री ए.एम.सप्रे, न्यायमूर्ति, म.प्र.उच्च न्यायालय खण्डपीठ इन्दौर, श्री के.सी.शर्मा, रजिस्ट्रार म.प्र.उच्च न्यायालय खण्डपीठ इन्दौर, जिलाधीश महोदय धार , जिला समन्वयक , जिला शिक्षा केन्द्र धार आदि इस शाला का निरीक्षण करके यहाँ के शैक्षणिक वातावरण एवं अध्यापन प्रणाली की प्रशंसा कर चुके हैं । शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये नवाचारी प्रयोग के रूप में शाला में लोकगीतों, बालगीतों व कविताओं तथा खेल गतिविधियों का उपयोग कर कठिन पाठ्यवस्तु को सरलतम रूप में प्रस्तुत किया, जिससे छात्राएँ खेल-खेल में रूचिकर शिक्षा प्राप्त कर सके । शिक्षण को अधिक रूचिकर बनाने के लिए जन मीडिया के रूप में पाठ्यक्रम संबंधित का प्रयोग किया गया । इसके अतिरिक्त विविघ चार्ट , खेल सामग्रियों , पोस्टर , नृत्य , संगीत , चित्रकला आदि सहायक सामग्री रही है । गिनती के ज्ञान हेतु गीतों एवं लोकगीतों का सहारा लेकर, गणना के ज्ञान हेतु कंकर-पत्थर आदि का सहारा लेकर तथा विविध रंगों के ज्ञान हेतु आसपास के प्राकृतिक परिवेश , परिधान एवं विविध वस्तुओं का सहारा लेकर एवं नैतिक शिक्षा प्रदान करने हेतु विविध कहानियों एवं कविताओं का सहारा लिया गया । कमजोर विद्यार्थियों को भी अन्य विद्यार्थियों के स्तर तक पहुँचाने के लिये एक कालखण्ड के अतिरिक्त अध्यापन की व्यवस्था लागू की गई । बाल केन्द्रित शिक्षण विधि के तहत शिक्षक द्वारा छात्राओं को क्षेत्र भ्रमण हेतु नदी, पहाड़, तालाब, पोस्ट आफिस, बैंक,पुलिस थाना आदि स्थानों पर ले जाकर वहाँ के वातावरण व कार्यप्रणाली से अवगत करवाया जाता है। इसके अतिरिक्त अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ मिलकर भी पाठ्यवस्तु को सामूहिक चर्चा के माध्यम से सरल एवं बालिकाओं के लिये सुग्राह्य बनाया जाता है ।

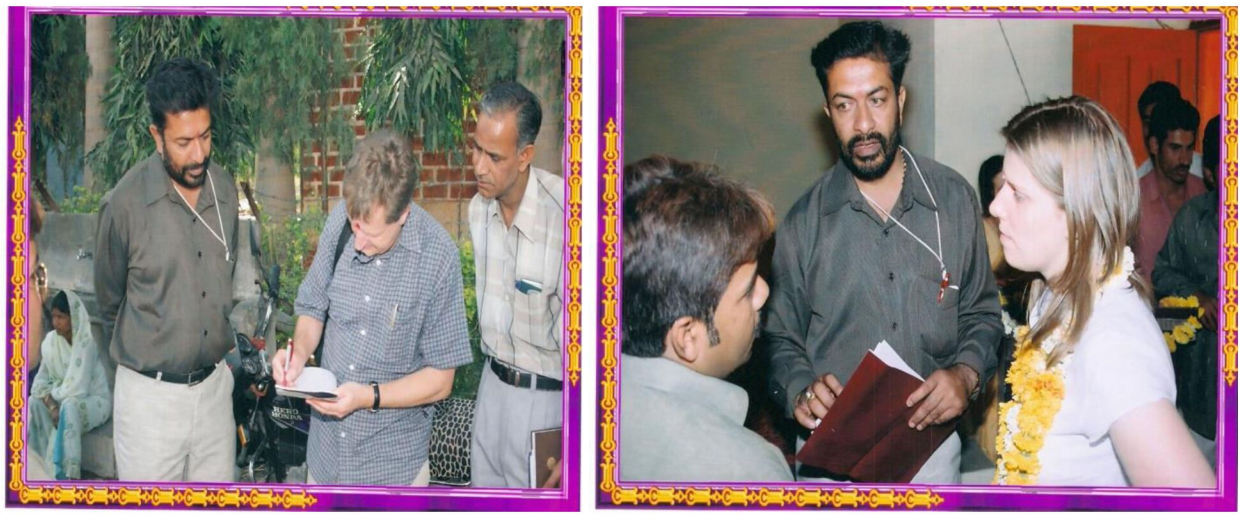

डी.एफ.आई.डी. लन्दन का दल विद्यालय की जानकारी लेते हुए

विद्यालय में पालकों की सहभागिता

पदस्थ शिक्षक

1. श्री अश्विन शर्मा , प्रधानाध्यापक

२. श्रीमती प्रतिभा तिवारी , माध्यमिक शिक्षक

3. श्री सुधीर कुमार चक्र , माध्यमिक शिक्षक

4. श्री प्रवीण कुमार पंचोली , सहायक शिक्षक

5. श्रीमती ममता रघुवंशी , प्राथमिक शिक्षक

6. श्री सदाकत खान , प्राथमिक शिक्षक

7. श्रीमती सुषमा परिहार , प्राथमिक शिक्षक

8. श्रीमती सोनाली सिसोदिया , प्राथमिक शिक्षक

9. श्रीमती रंजीता अमलियार , प्राथमिक शिक्षक

10. श्रीमती रानी राठोड़ , प्राथमिक शिक्षक

11. श्री संतोष मालवीय , प्राथमिक शिक्षक

12. श्री श्रीकांत पाण्डेय , प्राथमिक शिक्षक

13. श्री अनुराग परोहा , प्राथमिक शिक्षक

शाला में प्रतिदिन बालिकाओं को मध्यान्ह भोजन वितरण

बालिकाओं को मध्यान्ह भोजन वितरण करती डी एफ आई डी दल लन्दन की सुश्री सुसेन रोनाल्डसन